इस रोग से निदान हेतु हमारे किसान भाई रोग मुक्त शिरा को रोपकर मुक्ति पा सकते हैं। रासायनिक विधि से निदान हेतु किसान भाई साफ केप्टान/थिरम 2 ग्राम/ली0 पानी की दर से रोग ग्रसित शिरा पर छिड़कने से लाभ पा सकते हैं।

(ii) काला धब्बा (Black rot) – यह रोग भी फन्जाई के द्वारा होता है। इस रोग के कारण किसानों का उपज पर बुरा असर के साथ–साथ भंडारण क्षमता को भी बुरी तरह प्रभावित करता है। शिरा के स्पूटन को रोक देता है तथा काला धब्बा दिखाई देता है।

(iii) मोजेक – अन्य फसल की तरह शकरकन्द भी मोजेक रोगों से पूरी तरह प्रभावित होता है। इसके निदान हेतु किसाना बन्धु मेटासिसटॉक्स 1.25 मि0ली0 प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव कर पौधों को रोग से बचा सकते हैं।

तुड़ाई :- शकरकन्द को तुडाई के 4–5 दिन पूर्व पौधे की लता को काट देना चाहिए उसके बाद कुदाल की मदद से कन्द निकालना चाहिए । किसान भाई अकसर कन्द खुदाई के कुछ समय पूर्व लता को काटते हैं। इससे न केवल उपज में क्षति होती है। बल्कि भंडारण क्षमता भी प्रभावित होती है।

उपज :- अगर किसान भाई वैज्ञानिकों के निदेशानुसार शकरकन्द की खेती करें तो उन्हें 200–250 क्विंटल उपज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होगा।

आलेख : डा0 अजय कुमार, मुख्य वैज्ञानिक (शस्य)
कृषि अनुसंधान संस्थान, पटना
आलेख संकलन : श्री सनत कुमार जयपुरियार, परियोजना पदाधिकारी
दियारा विकास परियोजना, बिहार, पटना
प्रकाशन : ए0 सी0 जैन, उप कृषि निदेशक (सूचना) बिहार, पटना
फोन् : 0612–2928402, मोबाइल : 9431818718
ई–मेल् : infoagri-bih@nic.in/infoagri.bihar@gmail.com
वेबसाईट : www.krishi.bih.nic.in

बिहार सरकार

बिहार सरकार

कृषि विभाग

दियारा में शकरकन्द की वैज्ञानिक खेती

दियारा में शकरकन्द की वैज्ञानिक खेती

शकरकन्द का बिहार में बहुतायत मात्रा में खेती होती है। यह एक महत्वपूर्ण फसल है। पौष्टिकता के कारण इसे गरीबों का भोजन भी कहा जाता है। बिहार में इसकी खेती मानसून आधारित खेती (बिना सिंचाई वाले क्षेत्र में) होती है। पौष्टिक गुणों की चर्चा करें तो पाते हैं कि शकरकन्द में 3.6 से 4.5 प्रतिशत प्राटीन, 93 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, कैलोरी के दृष्टिकोण से प्रति 100 ग्राम में 396 तथा बिटामीन बी का सूक्ष्मता 240 है। अतः पौष्टकता के साथ–साथ कैलोरी की मात्रा भी शकरकन्द में काफी होती है। 16 प्रतिशत स्टार्च एवं 4 प्रतिशत चीनी की मात्रा के कारण इसका उपयोग स्टार्च उत्पादन के साथ–साथ अल्कोहल भी बनाने में इसका उपयोग होता है।

जलवायु :- शकरकन्द की खेती के लिए शुष्क गर्म (Moderate Warm) वातावरण की आवश्यकता होती है। 25 से 30^0C तापमान इसकी खेती के लिए सबसे उपयुक्त होती है।

भूमि :- शकरकन्द की खेती के लिए बलुई भूमि के साथ–साथ कम उपजाऊ वाली दोमट मिट्टी भी काफी अच्छी होती है। मिट्टी का पी0एच0 मान 5.2 से 6.7 यानि हल्की अम्लीय भूमि की जरूरत होती है। भारी दोमट मिट्टी में पौधों की वृद्धि कम होती है क्योंकि जड़ का विकास अवरुद्ध होता है साथ ही साथ ग्राह्य क्षमता भी कम होती है। शकरकन्द की खेती वार्षिक खेती के रुप में किसान भाई करते हैं। जबकि इसका पौधा बहुवर्षीय होता है।

शकरकन्द के उन्नत प्रभेद :- बिहार क्षेत्र में शकरकन्द की खेती हेतु निम्नलिखित प्रभेदों को लगाया जाता है :–

रेंजर, बी0–5941, इ0सी0–14048, इ0सी0–17767, इ0सी0–19715, ए0सी0–604, पूसा सफेद एवं पूसा सुनहरी इत्यादि ।

बीज दर :- समान्तया एक हेक्टेयर क्षेत्र में शकरकन्द की खेती हेतु 25000–30000 पौधों की एवं 1/2 भाग नर्सरी करने की आवश्यकता होती है। नर्सरी हेतु 45–60 से0मी0 लम्बाई की शिरा (Vine) मिट्टी में 5 से0मी0 की गहराई में खुरपी या कुदाल की सहायता से लगाया जाता है। शिरा को मिट्टी में इस प्रकार रोपना चाहिए कि शिरा के मध्य दो गांठ मिट्टी के अन्दर एवं शिरा का दोनों किनारा मिट्टी के उपर रहना चाहिए । क्यारी से क्यारी की दूरी 60 से0मी0 तथा शिरा से शिरा की दूरी 30 से0मी0 होना चाहिए। शिरा की बुआई मेढ़ बनाकर मई से जून माह में बिहार के अधिकांश क्षेत्रों में होती है। जबकि नर्सरी में बुआई फरवरी–मार्च माह में किया जाता है।

खाद एवं उर्वरक :- सामान्यता बिहार के क्षेत्रों में बिना उर्वरक प्रयोग के शकरकन्द की खेती होती है। परन्तु अधिक उपज प्राप्ति हेतु 250–300 क्विंटल कम्पोष्ट प्रति हेक्टेयर तथा 40kg नेत्रजन, 50kg फास्फोरस एवं 50kg पोटाश मिट्टी में अच्छी तरह मिलाकर बुआई करना लाभप्रद है। नेत्रजन की अधिक मात्रा के उपयोग से शिरा का वृद्धि काफी हो जाता है। अतएव नेत्रजन का प्रयोग सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए अन्यथा इसका प्रतिकुल असर उपज पर पड़ता है।

सिंचाई :- वस्तुतः शकरकन्द सूखा रोधी पौधा है। किन्तु मानूसन में वर्षा नहीं होने पर हल्की सिंचाई करने से उपज में वृद्धि होती है।

शकरकन्द के मुख्य रोग :- शकरकन्द में मुख्यतः दो तरह से रोग हानि पहुँचाते हैं।

(i) प्रथम–जिसमें पूरे पौधों पर या जड़ भाग में संक्रमण कर उपज को हानि पहुँचाता है।

(ii) दूसरा–भंडारण पश्चात् फसल को हानि पहुँचाता है।

(i) तना सूखना या गलना :– यह रोग मुख्यतः फन्जाई के द्वारा संक्रमित होता है। जिसमें शिरा से उत्पन्न कलियाँ सूख जाता है या शिरा पूरी तरह गल जाता है।